संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ०१ ● ०५ जनवरी, २०१६ पौष कृष्ण एकादशी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य समाज अमरोहा में गुरू विरजानन्द सभागार का उद्घाटन

देवेन्द्रपाल वर्मा

सत्य सनातन वैदिक धर्म में आयी गिरावट को दूर करने का आन्दोलन है आर्य समाज आन्दोलन रंग लाया सभी सामाजिक विकार मिटने लगे, पाखण्ड ढहने लगा। स्वाधीनता आन्दोलन में ८० प्रतिशत आर्य नर नारियों ने भाग लिया देश स्वतंत्र हुआ। स्वाधीनता के बाद अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना आर्य समाज को विश्वास शेष पेज ४ पर देखें....

दिनांक २२.१२.१५ को आर्य समाज अमरोहा के उत्सव में नव निर्मित गुरु विरजानन्द सभागार के उद्घाटन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा २ बजे मध्यान्ह पहुंचे। सभा को संबोधित करते हुए प्रधान जी ने देश की वर्तमान अवस्था पर विहंगम दृष्टि डालते हुए कहा कि पराधीनता से त्रस्त भारत माता कराह रही थी तभी महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने पराधीनता के मूल में ढोंग पाखण्ड, नारी की उपेक्षा, उसका पग पग पर निरादर उसकी दासी से भी ज्यादा प्रताडना, भ्रष्टाचार धर्म के नाम पर विभिन्न मत-मतान्तरों का निर्माण जिसमें बैर विरोध बढ़ने लगा औरविदेशी यवन यहां के शासकबन गये। देश का धन धान्य लूटा। फिर अंग्रेज यहां व्यापारी बनकर आये और हमारे शासक बन गये और हमारी संस्कृति सभ्यता को खत्म करने के लिए हमारा इतिहास बदल डाला। हमारी शिक्षा पद्धति बदल डाली। इतिहास बदल कर उन्होंने आर्यो को विदेशी प्रचारित किया और आदिवासियों को यहां का निवासी प्रचारित करके हममें आपस में ही बिलगाव बढ़ाने का यत्न किया। शिक्षा व्यवस्था ऐसी बनायी जिससे मनुष्य केवल रोजी रोटी कमाने में ही लगा रहे मानवीय नैतिक मूल्यों को समझने का अवसर ही न मिले। महर्षि ने इस सबको पराधीनता का कारण माना और देश को पूर्ण सुखी समृद्ध व स्वाधीन बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की और कहा कि यह कोई नया सम्प्रदाय नहीं

सोरों में महर्षि दयानन्द सरस्वती कीर्ति स्तम्भ स्थापित होगा।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कासगंज (एटा) द्वारा आयोजित सोरों कासगंज के उत्सव में दिनांक २२.१२.२०१५ को सायं ६ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के वहां पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने सोरों के उस ऐतिहासिक स्थल के दर्शन किये जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ६ माह प्रवास किया था और पौराणिक विद्वान अंगद शास्त्री को शास्त्रार्थ में परास्त किया था।

उस स्थल को जीर्ण शीर्ण अवस्था में देख कर प्रधान जी का मन दुखित हो उठा और उन्होंने तुरन्त उसके जीर्णोद्धार हेतु और महर्षि की स्मृति में एक कीर्ति स्तम्भ बनवाने की योजना बनायी जिसमें वहां के स्थानीय आर्य समाज के साथियों ने भी मदद की। इस सम्बन्ध में प्रधान श्री देवेन्द्रपाल जी प्रतिनिधि मण्डल के साथ कासगंज (एटा) के नगर पालिका के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार उर्फ पप्पू यादव से भेंट की। उन्होंने उनकी मांग को मानते हुए तुरन्त एक करोड़ रूपये की राशि मंजूर कर वहां के ई.ओ. को आदेशित किया। इस प्रकार महर्षि की एक प्राचीन धरोहर नष्ट होने से बचकर संरक्षित और सुसज्जित हो गयी प्रधान जी का त्वरित सतत् प्रयास सराहनीय है।

कार्यक्रम में स्वामी क्षमानन्द जी शाहजहांपुर, स्वामी शिवानन्द जी कासगंज, गीता शास्त्री, बहराईच, कृपाल सिंह आर्य एवं समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री समर शास्त्री, मंत्री लोकेन्द्र देव आर्य, कोषाध्यक्ष की दिनेशचन्द्र बिरला, मोहनलाल आर्य यथोचित आर्य, जितेन्द्र आर्य वेद प्रकाश आर्य, अतुल आर्य आदि व्यक्ति मौजूद थे।

वेदामृतम्

तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय।
सो अंधे चित् तमसि ज्योतिर्विदत् मरूत्वान्नो भवत्यिन्द्र ऊती।। ऋ.१.१००.८

(नरः) पुरूषार्थी मनुष्य (शवसः) बल के (उत्सवेषु) उत्सवों में (तं) उस (नरं) नेता को (अवसे) रक्षण के लिए (अपसन्त) प्राप्त करते हैं, (तं) उसे (धनाय) ऐश्वर्य के लिए प्राप्त करते हैं (सः) वह (अंधे चित्) अंधे भी (तमसि) अंधकार में (ज्योतिः) ज्योति (विदत्) प्राप्त करा देता है (मरूत्वान) प्राणवान (इन्द्रः) परमात्मा (नः) हमारी (ऊती) रक्षा के लिए (भवतु) हो।

इन्द्र प्रभु अंध धुप्प अंधकार में भी ज्योति प्राप्त कराने वाले हैं। जब मन में ऐसी विकट तामसिकता छा जाती है कि कर्तव्य की दिशा सर्वथा आंखों से ओझल प्रतीत होने लगती है उस समय भी प्रभु ज्योति की रेखा प्रकट करके दिशा प्रदर्शक बनते हैं। इन्द्र प्रभु मरूत्वान है प्राणवान है समर्थ है भक्त की रक्षा के लिए उत्साहवान है जागरूक हैं। उन्हीं से हमारी विनय है कि जब भी हम पर संकट के बादल मंडराये हमारी नाव मंझधार में डूबने लगे हम पर विपत्तियों का पहाड़ आ पड़े हम असहाय हो जाये तब वे आकर हमारी रक्षा करें, हमें अपनी शरण में ले विपदा से हमारा उद्धार करें और हमें पैरों पर खड़ा करें। हे इन्द्र प्रभु तुम हमारी प्रार्थना को सुनो हम असहायों के सहायक बनकर रक्षा के लिए दौड़ो और रक्षा का वरदान देकर हमें सदा के लिए निश्चिन्त कर दो।

-डा. रामनाथ वेदालंकार

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रधान मंत्री श्री मोदी का विश्व में शान्ति समृद्धि स्थापित करने का अतुलनीय प्रयास

हमारे देश के प्रधान मंत्री विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित करने एवं सभी में एकत्व एवं समत्व के भाव भरने का सवद् प्रयास करने में लगे हुये हैं अभी हाल में पाकिस्तान के प्रधान मंत्री नवाज शरीफ के पारिवारिक समारोह में बिना पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के पाकिस्तान जाना उनकी राजनीतिक सूझबूझ का प्रशंसनीय कदम है।

आज सारे विश्व में आतंकवाद अपने अपने ढंग से फैलाया जा रहा है कोई भी राष्ट्र उनसे सुरक्षित नहीं है। सभी देश अपने अपने ढंग से अपनी चिन्तना व्यक्त करते हैं परन्तु वह चिन्तना सार्वदेशिक नहीं एक देशिक होने के कारण सफल नहीं हो पा रही। हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व में अनेक देशों के शार्क सम्मेलन में इस पर निष्पक्ष व ओजपूर्ण विचार देकर इसे सार्वदेशिक उपाय के रूप में सभी देशों को अपनाने का सन्देश दिया। जिसकी सभी देशों ने सराहना की और उसी प्रक्रिया को चरितार्थ करने के सुयोग में वे पाकिस्तान में प्रधान मंत्री के पारिवारिक समारोह में शामिल होकर अपने पारिवारिक समारोह के रूप में प्रस्तुत किया जिसकी सभी लोगों ने सराहना की।

परन्तु हमारे देश की कांग्रेस पार्टी को यह रूचिकर नहीं लगा। क्योंकि कांग्रेस नेताओं को देश एवं विश्व हित के बजाय अपनी पार्टी की सर्वोच्चता का भाव ग्रसित कर रहा है। निश्चय ही देश की सत्ता में अधिकांश समय तक कांग्रेस पार्टी की सरकार ही सत्तासीन रही है। परन्तु कुछ काल से कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने पुत्र मोह ग्रस्त होकर देश के हित को उनकी उच्च पद पर बैठाने की भावना से नजरन्दाज करना प्रारम्भ किया। फलतः जनता जनार्दन का कांग्रेस सरकार के प्रति व्यामोह घटने लगा और अन्ततः वह विगत निर्वाचन में पराजित हो गयी और भारतीय जनतापार्टी की सरकार श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सत्तासीन हो गयी। चाहिए तो यह थाकि कांग्रेस के नेता पराजय के मूल कारणों पर चिंतन करते उन कारणों को दूरकरने में लग कर पुनः सत्ता प्राप्ति के मार्ग को ठीक करते परन्तु कांग्रेस उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी इस पर कोई चिन्तन न करके मोदी सरकार के विरूद्ध अनाप शनाप बयान बाजी करके अपनी खीझ मिटाने में व्यस्त होगये और उनकी मां सोनिया गांधी पुत्र के व्यामोह में इतनी ग्रस्त सी लग रही है कि वे सत्ता में लाने के लिए विगत की गलतियों के सुधार का सन्देश देने के बजाय उनकी बयानबाजी को ही मौन समर्थन सा दे रही हैं।

कांग्रेस पार्टी के सभी नेताओं व कार्यकर्ताओं को इस पर गम्भीर चिन्तन करके पुनः कांग्रेस के वर्चस्व के पुनः स्थापित करने के लिए विगत की खामियों को दूर करने के लिए लगना चाहिए। परतु कतिपय चाटुकार नेता देश हित को भूलकर उनकी हां में हां मिलाना ही अपना धर्म बना रहे हैं।

पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं व पार्टी अध्यक्ष श्रीमती गांधी को इस पर गम्भीर मन्थन की आवश्यकता है श्रीमती सोनिया गांधी पुत्र मोह के स्थान पर पार्टी एवं देशहित को गहराई से देखने व चिन्तन करने का संकल्प लें और कांग्रेस पार्टी के पूर्व गौरव को स्थापित करने के लिए संलग्न हो अन्यथा कुछ समय बाद कांग्रेस का नामोनिशान ही मिट जाये तो आश्चर्य न होगा।

आशा है सोनिया जी और सभी वरिष्ठ कांग्रेस नेतागण कांग्रेस के गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए शुद्ध मन से देशहित की भावनाओं को ही अपनी विषय सूची में प्राथमिकता से जोड़ेंगे। निश्चय ही इस प्रयत्न से कांग्रेस अपने प्राचीन गौरव को संस्थापित करने में समर्थ होगी और निरर्थक मोदी सरकार की निन्दा से बचेंगै।

-सम्पादक

सृष्टि रचना की एक झलक
वेद एवं एतरेय उपनिषद व अन्य आर्ष ग्रन्थों से

पं० उम्मेदसिंह विशारद
वैदिक प्रचारक

श्रध्येय, जिज्ञासु पाठक महोदय जी, सृष्टि रचना का विषय विस्तृत एवं अति गम्भीर है। विद्वान एवं नियमित स्वध्यायशील पाठक तो इस विषय में विज्ञ हैं, ही किन्तु अन्य जिज्ञासु पाठकों की भी जानकारी हेतु यह छोटा सा लेख प्रस्तुत हैं।

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किचन
मिषत स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति !!१!! (ऐतरेय उपनिषिद)

जब सृष्टि की रचना नहीं हुई थी तब पहले पहल इकला आत्मा ही था। कोई दूसरी चीज़ नही थी। आत्मा ने ईक्षण सबकुछ बारीकी से विचार से देख लिया कि लोकों का अर्थात् नाना रूप सृष्टि का किस-किस रूप में सर्जन करूँ और उसने चार लोकों को रचा-''अम्पस,'' मरीर्ची, ''मर'' और द्युलोक से परे और घु लोक तक जो लोक है व अम्भस लोक हैं, उसके नीचे अन्तरिक्ष में जो सूर्य चन्द्र नक्षत्रादि प्रकाश-युक्त लोक है वह मरीची लोक हैं। यह पृथ्वी जिसमें प्राणी उत्पन्न होते और मरते हैं, यह मृत्यलोक ''मर'' लोक हैं पृथ्वी के भी जो नीचे हैं वह 'आपस' लोक हैं।

स ईक्षतेमे नु लोका लोकपालान्नु सृजा इति।
सोअदम्य एवं पुरषं समुद्धत्यामूर्च्छयत्।। (एतरेय उपनिषिद)

उसने फिर ईक्षण किया कि रचे गये लोकों की रक्षा कैसी होगी ?इसलिए लोकपालों की रचना करके जल में से पुरुष को निकाला। जल का अर्थ पानी नहीं अपितु पंच महाभूतों के सूक्ष्म रूप को जिसके कारण रचना सम्भव हो सकती हैं जल कहा गया है। जल से पुरुष निकाला का अभिप्राय विराट पुरुष से है उस पुरुष से जिसे जगह-जगह ''हिरण्यगर्भ'' कहा गया है। प्राकृतिक सूक्ष्म तत्वों से विराट पुरुष को हिरण्यगर्भ हो रचने के बाद उसने मूर्च्छित किया गया। विराट पुरुष कच्ची हालत में था मूर्च्छित करने की उसके परिपाक की आवश्यकता थी।

ईश्वर सृष्टि कर्त्ता, जीव भोक्ता और प्रकृति भोग्या है। इसके रचियेता ईश्वर है, और ईश्वर ने अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रचाये। प्रकृति सूक्ष्म और जड़ है जो कि ईश्वर के आधार पर रहती है ईश्वर महान और सूक्षतम है।

एक अरब छानवे करोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सो छहत्तर वर्ष पूर्व यह पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रादि कुछ नही था, बद्ध जीवात्मायें मूर्च्छित अवस्था में थी। जैसे निन्द्रा में कोई अनुभूति नहीं होती, उसी तरह प्रलय में भी नही होती है। सत्व, रज, तम कणों को ईश्वर इकट्ठा करके अपने ज्ञान सामर्थ्य से महत्व फिर अहंकर फिर पाँच ज्ञानेन्द्रिया पाँच कर्म इन्द्रियां मन व पाँच तन्मात्रायें (सूक्ष्मभूत) कुल अठारह तत्व फिर पाँच स्थूल भूत उसमें सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी आदि यह स्थूल जगत बनाया। वनस्पति, मछलियां, कीट, पतंग पशु आदि के उपरान्त अन्त में मनुष्य की शरीर की रचना हुई। और मनुष्य युवा शरीर वाले उत्पन्न हुए और मैंथुनी सृष्टि बना।

प्राणी के उत्पत्ति के चार प्रकार :- १ जरायुज अर्थात् मनुष्य पशु आदि- २. अण्डगः अर्थात्-पक्षी कीट पतंग आदि ३. उदभिजः अर्थात्-वृक्ष आदि पृथ्वी से निकलते है ४. स्वेदजः अर्थात् पसीने से जुऐं और गेहूँ आदि में कीड़े कीटाणु आदि।

ईश्वर ने सृष्टि का संविधान बनायाः- चार वेद बनाये, ऋग्वेद, अग्नि, ऋषि- यजुर्वेद वायु, ऋषि, सामवेद आदित्य ऋषि और अथर्ववेद अगिरां ऋषि को चारों वेदों का ज्ञान दिया।

सृष्टि की आयु :- १ अरब ६६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार १०० वर्ष अमैथुनी सृष्टि को बीत गये हैं और पूर्ण सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है। और इतने ही वर्ष प्रलय की अवस्था रहती हैं फिर विकास की प्रक्रिया आरम्भ होती है।

ईश्वर ने सृष्टि की अद्भुत रचना की है :- अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सारे ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किये हुए है। सूर्य पृथ्वी से ६ करोड ३० लाख मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से २ लाख ४० हजार मील दूर है और ये निरन्तर बिना किसी सहारे के अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं किन्तु आश्चर्य है इनकी दूरी घटती बढ़ती नही है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा १७ दिन ६ घण्टे ५६ मिनट १२ सेकेण्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर २३ घण्टे ५६ मिनट ६ सेकेण्ड में घूमती है और सूर्य की परिक्रमा करते हुए एक सेकेण्ड में १८ मील की दूरी तय करती है। पृथ्वी अपनी धूरी पर १०३७ मील प्रति घण्टा के रफ्तार से घूमती है।

सूर्य का व्यास ८ करोड़ ५८ लाख ८५ हजार मील है और प्रकाश की किरण ८ मिनट में पृथ्वी पर पहुँचती है। सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है और अपनी धूरी पर ६ घण्टे ५५ मिनट में घूमता है, और ३३३ दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य जलता हुआ अग्नि का पिन्ड है इसका तापमान १२००० डिग्री सेन्टीग्रेट है। और दूरी इतनी है कि तापमान सामान्य बना रहता है। अगर थोड़ी सी बाल बराबर भी पृथ्वी के नजदीक आ जाये तो पृथ्वी जल कर राख हो जायेगी। और थोड़ी सी भी दूर हो जाये तो पृथ्वी बर्फ बन जायेगी। और सूर्य की किरणे पृथ्वी पर सीधी पड़े तो जीना दूभर हो

शेष पेज ४ पर देखें....

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध सभी जनपदों में कार्यरत् आर्य समाजें/जिल आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपना-अपना वार्षिक विवरण चित्र में भरकर दशांश, वेद प्रचार फण्ड, सूद कोटि, प्रतिनिधि एवं आर्य मित्र वार्षिक शुल्कादि सभ कार्यालय में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लें, अन्यथा की स्थिति में नियमानुसार कार्यवाही सम्पन्न की जाएगी। वार्षिक विवरण सम्बन्धी चित्र संख्या- से 9 तक डाक से भेज दिये गये हैं।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्व
सभा

धरोहर.....

आर्य समाज एवं राष्ट्र नायक सच्चे दयानन्द भक्त चौधरी चरण सिंह

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

सिर पर गांधी टोपी गले में जवाहर कट नीचे कभी धोती और कभी चुस्त पायजामा पहने कभी ओवर कोट से शोभायमान होकर हाथ में बेंत लेकर जब चलते थे तो दूर से कभी नेहरू जी जैसे लगते थे तो कभी सीधे सादे किसान की तरह शोभायमान होते थे। सदैव गंभीर भाव मुद्रा में चिन्तन करने वाले व्यक्तित्व का नाम है चौधरी चरण सिंह आर्य जो आपको संस्कारों से प्राप्त थी। आपका जन्म तत्कालीन मेरठ जिले की हापुड तहसील में बाबूगढ़ छावनी के पूर्व में लगभग ५ किमी. नूरपुर ग्राम में हुआ था। २३ दिसम्बर सभी किसानों को याद रहती है क्योंकि आपने अपना जन्मदिन दिल्ली में पहली बार जब मनाया था तो जैसे कोई समुद्र हिलोरे लेता है उसी प्रकार आस पास एवं सुदूर से लाखों की संख्या में किसानों का मेला लगा था और चौधरी साहब सम्भवतः गृह मंत्री थे आपने किसानों की लड़ाई के लिए सावधान रहने का आह्वान किया था जो लोग दिल्ली गए थे वे इसके साक्षी हैं आपने अपने बचपन से ही आर्य समाज की विचार धारा को अपनाया महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा लिखित दयानन्द प्रकाश आद्योपान्त पढ़ा हैं आप अपने भाषण में कहा करते थे कि मैंने सत्यार्थ प्रकाश तो पूरा नहीं पढ़ा लेकिन दयानन्द प्रकाश पूरा पढ़ा है अतः मैं पक्का दयानन्दी हूं आर्य समाजी पक्का नहीं हूँ क्योंकि राजनीति की कीचड़ में मुझे रहना पड़ा है। एक बात अपने भाषण में बड़े गर्व से कहा करते थे कि मेरे में जो कुछ भी अच्छाइयां है वे तो आर्य समाज के प्रभाव के कारण है तथा जो भी बुराइयां है वे सब राजनीति के कीचड़ के कारण है। इतना स्पष्ट वक्ता एवं ईमानदार तथा सच्चा देश भक्त अपने पिता से प्राप्त संस्कारों की देन हैं। आप बचपन से ही नूरपुर से भदौला ग्राम जो मोदीनगर के निकट है चले गए थे आपकी शिक्षा मेरठ और गाजियाबाद में हुई। गाजियाबाद में ही आपको आर्य समाज गंज मंडी का सदस्य होने का सौभाग्य मिला। बाद में आप आर्य समाज के प्रधान एवं मंत्री पद पर भी प्रतिष्ठित हुए हैं। आप गुरूकुल डौरली मेरठ के भी कई वर्ष प्रधान पद पर रहे हैं आपने अखिल भारतीय आर्य कुमार सभा के प्रांतीय सम्मेलन की शिकोहाबाद में अध्यक्षता की है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी सभा ''परोपकारिणी सभा'' अजमेर के भी आप ट्रस्टी एवं प्रधान रहे हैं। आप आर्य समाज के छोटे से छोटे कार्यक्रम में जाने को भी अपना सौभाग्य समझते थे। मुझे स्मरण आ रहा है कि प्रकाशवीर शास्त्री भवन ब्रजघाट में बन चुका था चौधरी साहब प्रधानमंत्री बन चुके थे किसी ने बताया कि प्रकाशवीर शास्त्री जी की स्मृति में ब्रजघाट पर आर्य समाज बना है तो बोले मेरी इच्छा है उसे देखने की। शिवरात्रि का पर्व था अचानक कार्यक्रम बन गया आर्य समाज के अधिकारियों के हाथ पांव फूल गये प्रशासन तंत्र जुट गया लेकिन वहां आकर देखा तो आश्चर्य कि मात्र १०० के लगभग आर्य और इतने ही प्रशासन पुलिस आदि की व्यवस्था थी उसी में बैठकर चौधरी जी ने अपना भाषण दिया और प्रकाशवीर शास्त्री जी का स्मरण किया। साथ ही महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि के शब्द कहते हुए अश्रुधारा बह निकली इतना करूण हृदय था आपका कि किसी के दुख को देखकर स्वयं रो पड़ते थे। आपसे कई बार मिलने का सौभाग्य मिला गुरूकुल म.वि. ततारपुर की यज्ञ शाला का शिलान्यास श्री रामगोपाल जी ने किया था तो उद्घाटन कराने की इच्छा हुई कि चौ. चरण सिंह जी प्रधानमंत्री से कराया जाये बात होते होते सरकार बदल गयी लेकिन हमारा प्रयास जारी रहा और श्री निरंजन सिंह जी आर्य तथा म.बेगराज आर्य जी के प्रयासों से ५ मार्च के लिए उनकी स्वीकृति मिल गयी। आप सम्मेलन पर आये लेकिन यज्ञशाला अभी अधूरी थी यज्ञ करके बोले इसे पूरी कर लो फिर आ जाऊँगा बहुत सुन्दर भाषण दिया। गाजियाबाद में कोई बैठक थी शीघ्र चले गये अतः उस भारी भीड़ की चर्चा अभी तक रहती है। गुरूकुल में इतनी भीड़ फिर नही आ पाई। पुनः फिर कार्यक्रम निश्चत हो गया लेकिन गुरूकुल का दुर्भाग्य था कि प्रातःकाल से ही वर्षा होती रही और वे वर्षा में ही आये तथा यज्ञ के बाद छाता लेकर उद्घाटन किया बरामदे में ही सभा हुई और फिर नाश्ता करके वर्षा में ही निकल गये ऐसा सुखद अवसर आज भी स्मृतियों में ताजा बना हुआ है आपकी स्मरण शक्ति का परिचय इस बात से मिलता है कि जब यज्ञ शाला में यज्ञ करने लगे तो सायंकालीन आहुतियां प्रारम्भ करने पर बोले कि रूको सूर्यो ज्योति ..... बोले हमने कहा कि प्रातःकालीन आहुतियां हो चुकी है तो बोले मेरी तो नहीं हुई अतः पुनः बोलो और यज्ञ पूरा किया महर्षि दयानन्द जी कैसा देश बनाना चाहते थे इस विषय पर लंबा भाषण दिया लग रहा था कि आर्य समाज का कोई उपदेशक बोल रहा है। एक बार आपके ग्रामवासी दिल्ली गये और कहा कि चौधरी साहब इस बार अपना जन्म दिन अपने जन्म स्थान पर मनाओ तो बोले ठीक है तैयारी करो गुरूकुल वासी भी स्वागत की तैयारी में लग गये लेकिन पूर्व सूचना के अभाव में आप अखबार पढ़ते हुए सीधे निकल गये जब वहां पहुंचे और यज्ञवेदी पर बैठे तो एकदम पूछा आचार्य धर्मपाल जी कहां है? क्या उन्हें नहीं बुलाया गया है? माइक पर आवाज दी गई इतनी भीड़ में हमें वहां कौन जाने देता लेकिन माइक पर आवाज लगाने से हमें सुविधा हो गयी और यज्ञवेदी पर जाकर उनके साथ यज्ञ करने का पुनः सौभाग्य प्राप्त हुआ फिर सभामंच पर भी साथ ही रहे क्षेत्र से आये लोगों को आपने सुन्दर उद्बोधन दिया। आपका यज्ञ एवं आर्य समाज के प्रति अत्यन्त लगाव था दिल्ली में अपने आवास पर अमावस्या पूर्णिमा अथवा किसी भी विशेष पर्व पर आप प्रेमपाल जी शास्त्री जो आर्य समाज शक्ति नगर दिल्ली में रहते हैं से यज्ञ कराया करते थे। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी ने १९७३ में मई मास में आर्य महासम्मेलन मेरठ में कराया था उसमें चौधरी साहब ने लगभग १ घंटा अपना भाषण दिया था प्रत्येक व्यक्ति आपके आंकड़े और तिथियों की प्रशंसा कर रहा था। आपको इतना याद कैसे रह जाता है।

एकबार आपका कार्यक्रम अमरोहा के हिंदू कालेज में था भारी भीड़ थी चौ. चन्द्रपाल जी सांसद जो गुरूकुल ततारपुर के अध्यक्ष थे उन्होंने किसी अवसर पर उनका अभिनन्दन करने के लिए कार्यक्रम बनाया था मैं कुछ विलम्ब से पहुंचा अतः पीछे खड़ा होकर देख सुन रहा था पता नहीं कैसे उनकी दृष्टि पड़ गयी कुछ वेशभूषा और दाढ़ी भी पृथक सी ही रहती थी उन्होंने चौ. चन्द्रपाल जी को इशारा किया और उन्होंने माइक पर आवाज देकर मुझे मंच पर बुला लिया इतनी भीड़ में सूक्ष्म दृष्टि के साथ साथ आपके हृदय में ब्र. एवं आर्य विद्वानों के प्रति कितना आत्मीय स्नेह था इस घटना से आप अनुमान लगा सकते हैं वहां कोई आर्य समाज का कार्यक्रम नहीं था अपितु सभी समाजों के नेता तथा जन समुदाय था। ये क्षण सदैव स्मृतियों की धरोहर बनकर उन्हें नमन करते हैं। दिल्ली के एक आर्य नेता पत्रकार थे उन्होंने अपने एक लेख में अपना संस्मरण लिखा है कि जब चौधरी साहब गृहमंत्री बने तो एक पत्रकार वार्ता चल रही थी उसमे किसी ने उनसे पूछा आप आर्य समाज को मानते हैं तो बोले हां मानता हूं तभी एक मुसलमान बोल उठा कि आर्य समाज और मुसलमानों का इस्लाम धर्म एक जैसा ही है मूर्ति पूजा का दोनों ही विरोध करते हैं पत्रकार लिखता है कि चौधरी साहब ने तुरंत उत्तर दिया कि नहीं आर्य समाज की तुलना आपसे कभी नहीं की जा सकती आप गाय मारकर खाते हो हम उसे मां कहकर पूजते हैं कितना बड़ा अन्तर है आप इस अंतर को दूर करो तब कुछ सोचा जायेगा उनके उत्तर से सभी शान्त होकर सोचने लगे कि काश आज के नेता कुछ उनसे प्रेरणा लेते तो कितना अच्छा होता आज उन्हें प्रसन्न करने के लिए अपने नियम भी ताक पर रख दिये है क्या उन्हें वोट का लालच नहीं था? लेकिन सर्वोपरि अपना धर्म है जिसकी रक्षा और प्रतिष्ठा के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे। आपने वकालत की राजनीति में आये स्वतंत्रता आन्दोलन में आपने भाग लिया विधायक बने आप प्रांत में न्याय विभाग, पुलिस विभाग एंव कृषि मंत्री मुख्यमंत्री के पदों पर रहे , केन्द्र सरकार में गृहमंत्री, वित्त मंत्री, उप प्रधानमंत्री फिर प्रधानमंत्री के पदों को सुशोभित किया। इस पद पर पहुंचकर भी आपने अपनी पहचान को बनाये रखा। देहात का गुड मठ्ठा सदैव याद रखते रहे गाजर का हलुआ विशेष रूचि से खाते थे। गजरौला की तरफ जाते हुए म. बेगराज जी आर्य भजनोपदेशक साथ थे बोले चौधरी साहब चाय पी लो इच्छा उनकी भी थी बोले यहीं पर ले आओ महाशय जी बोले साहब पूरे वर्ष आपके गीत गायेगा और चाय अपनी ओर से पिलायेगा तो बोले ज्यादा तेज हो गये हो चलो भई जैसी आपकी इच्छा। इस प्रकार के सादे जीवन द्वारा ही सदैव स्मरण रहे म.बेगराज जी को अपने प्रचार समय में प्रायः साथ रखते और भजन बुलवाते थे एक भजन महाशय जी ने बनाया था

एक ग्रामों का राजा एक शहरों की रानी

एक हमदर्द गरीबों का एक दौलत की दीवानी।

इस भजन को सुनकर अति प्रसन्न होते थे। एक देहाती तर्ज पर होली के गीत बहुत पसन्द थे आप संगीत के साथ साथ बहुत अच्छे लेखक भी थे आपने अर्थशास्त्र, कृषि शास्त्र पर बहुत लिखा है एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसका नाम है शिष्टाचार उस समय

शेष पेज ७ पर देखें....

पृष्ठ २ का शेष.....

जायेगा। ईश्वर की व्यवस्था से इसमें सुरक्षा ओज किरणे रहती है जिसे ओज परत कहते है।

पृथ्वी का व्यास ७६०० मील है। पर्वत की ऊँची चोटी ५११ मील ऊँची है और समुद्र की गहराई ७ मील है। ३/४ पृथ्वी में जल ही जल है। और संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है, यदि उसमें जरा सी भी व्याधान हो जाये तो ब्रह्माण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जायेगा।

सर्वाधिक तारों की चमकने वाली संख्या २० है इसमें व्याघ नाम का तारा सर्वाधिक दीप्तमान है और सूर्य की तुलना में यह तारा २१ गुना अधिक है। सूर्य का तापमान २३१० डिग्री फारनेहाइट है जबकि पृथ्वी का ११० डिग्री है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा १ वर्ष में पूर्ण करती है और उसकी गति प्रति घण्टा १ लाख १ सौ निन्नावें मील होती है और सौर मण्डल का व्यास १ शंख १८ खरब किलोमीटर है और समूचे ब्रह्मण्ड को सम्भालना सूर्य का काम है और समस्त सौर मण्डल बिना टकराये सहायता करते हैं। समूचा ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है इसके रचयिता केवल-केवल परमपिता परमेश्वर है।

सूर्य की गरमी :- सूर्य जीवन और पृथ्वी का आधार है और २ अरब कुछ करोड़ वर्ष उपरान्त गर्मी कम होती जायेगी। तब इस पर आधारित मनुष्य पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वनस्पति आदि धीरे-धीरे क्षीण होते हुए नष्ट हो जायेंगे। इस उत्पक्ति प्रलय की प्रक्रिया से संसार की नश्वरता ज्ञात होती है।

सप्तास्यासन परिधयविस्थ सप्त समिधः कृताः।
देवा यज्ञं तन्वाना अवघनन पुरुष पशुम।। (ऋ)

अर्थात् ईश्वर ने एक-एक लोक के चारों ओर सात-सात परिधि ऊपर रची हैं जो गोल चीज के चारों ओर एक सूत के नाप के जितना परिमाण होता है उसको परिधि कहते हैं। सो जितने ब्रह्मण्ड में लोक हैं ईश्वर ने उन एक-एक के ऊपर सात-सात आवरण बनाये। एक समुद्र २ त्रसरेणु उमेघ मण्डल का वायु ४ वृष्टिजल पून्वृष्टि जल के ऊपर एक प्रकार का वायु छः- अत्यन्त सूक्ष्म वायु जिसको घन्जय कहते हैं। ७- सूत्रात्मा वायु ये सात परिधि कहते हैं तथा इस ब्रह्माण्ड की रचना भी सामाग्री इक्कीस प्रकार की होती है।

ईश्वर ने प्रकृति से लेकर घास प्रर्यन्त जंगल को रचाया है। इसलिए ईश्वर का नाम विश्वकर्मा हैं और जब जगत उत्पन्न नही हुआ था तब ईश्वर के सामर्थ्य से कारण रूप में वर्तमान था। इसी प्रकार ईश्वर अपने सामर्थ्य से कार्य रूप जगत को रचता है।

जब ईश्वर ने मनुष्य शरीर आदि को रचा, तब मनुष्य दिव्य कर्म करके देव कहाता है और संसार में उत्तम सुख को पाता हैं और परमेश्वर की प्राप्ति रूप मोक्ष की इच्छा करके उत्तम कर्म उपासना और ज्ञान में पुरुषार्थ करता है वह उत्तम देव कहाता है।

आत्म निवेदन -

सृष्टि रचना का संक्षिप्त लेख का अभिप्राय मेरा केवल यह है कि आज के मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान वेदों की शिक्षा पर न चल कर अन्धविश्वासों और कल्पनाओं में भटक कर उस सत्य ईश्वर को भूल बैठे हैं, उन्हें ईश्वर की सत्ता का आभाष हो सके, और वह वेदों की ओर लौट सकें। ●●●

पृष्ठ १ का शेष.....

था कि अब हमारी सरकार देश से सभी बुराइयों को नष्ट करके सम्पूर्ण सुख समृद्धि पूर्ण राष्ट्र बनायेगी परंतु सरकार का ध्यान भौतिक समृद्धि तक सीमित हो गया फलतः वही गुलाम बनाने वाली शिक्षा ही चालू रखी गयी। शिक्षा तिरोहित हो गयी डिग्रियां ही शिक्षा का मापदण्ड बन गयी फलतः बच्चों में नैतिकता का उत्तरोत्तर ह्रास होने लगा। अतः अब पराधीनता काल से भी ज्यादा सारी बुराइयां बढ़ रही हैं। नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। जाति पांति का भेद वोट बैंक का साधन बन गया है। आर्य समाज अपने दायित्व का पूर्ण रूपेण निर्वाह नहीं कर रहा है। समाज मंदिर में हवन यज्ञ या सत्संग समय समय पर समाजों द्वारा सम्मेलनों के आयोजन तक ही सीमित रहने के कारण आज सभी बुराइयां विकराल रूप धारण कर भारत और भारतीय संस्कृति को नष्ट कर रही हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना सम्पूर्ण विकारों से देश को रहित बनाने के लिए की थी और विरासत के रूप में वह जिम्मेदारी हमें सौंपी है। हम अपनी निद्रा त्यागे और अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए मनसा वाचा कर्मणा अपने दायित्व के निर्वाह के लिए परस्पर बैर विरोध त्याग कर एक जुट होकर आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रता से चलाने में जुट जाये। हमारा संकल्प सफलता देगा और हम महर्षि के मनोभावों के अनुरूप भारत बनाने में समर्थ होंगे।

जिलाधिकारी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदों का वैज्ञानिक भाष्य किया।

एस.पी. अमरोहा श्री त्यागी जी ने कहा कि आर्य समाज ने हिंदू समाज में फैली बुराइयों को दूर कर महिलाओं को शिक्षित कर समाज में उनको सम्मानित स्थान दिलाया।

श्री विजय गौतम ए.एस.पी. ने कहा कि आर्य समाज ने समाज में फैली भ्रांतियों के खिलाफ हमेशा संघर्ष किया, ढोंग पाखण्ड अंध विश्वास नशा आदि के खिलाफ अनेक आन्दोलन किये। धर्म को आम जनता तक पहुचाया। मैं श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. को विगत २० वर्षो से जानता हूँ आप बहुत ही संघर्षशील व्यक्ति हैं।

सभा स्थल पर पहुंचते ही सभा प्रधान जी का आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने भव्य स्वागत किया। सभा का कुशल संचालन ठा. अशोक आर्य सम्पादक आर्यावर्त केशरी प्रधान जिला सभा ने किया। उत्सव में श्री हेतराम सागर श्री विनय प्रकाश आर्य श्री राजनाथ गोयल श्री ओमपाल सिंह आर्य श्री मंजू सिंह आर्य श्री तेजपाल आर्य श्रीमती आशा आर्या आदि का अनन्यतम सहयोग प्रशंसनीय है। ●●●

समस्या आपकी समाधान हमारा

आदरणीय डॉ. साहब,

सादर नमस्ते!

आशा है आप सानन्द होंगे। विगत लम्बे समय से आपका कोई समाधान आर्य मित्र में पढ़ने को नहीं मिला। कृपया इसकी निरंतरता बनाये रखें ताकि हम सभी पाठक गण इससे लाभान्वित होते रहें। अस्तु।

मेरी समस्या मुझे शरीर के जोड़ों में हो रही सूजन व दर्द को लेकर है। मेरी आयु इस समय लगभग ५५ वर्ष है। मैं मधुमेह का भी रोगी हूं। इधर मुझे मोटापा भी परेशान कर रहा है। तरह तरह की दर्द की दवायें खाता रहता हूं मेरा पेट भी खराब रहता है। मैं बहुत परेशान हूं। कृपया मेरी समस्या का समाधान करने का कष्ट करें।

'राम विलास आर्य
अलीगढ़(उ.प्र.)

प्रिय राम विलास जी,

इधर कुछ पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन व व्यस्तता के कारण पाठकों की समस्याओं का समाधान नहीं कर सका। इसका मुझे दुःख है।

आपने अपनी समस्या का विवरण प्रेषित किया है आपके द्वारा प्रेषित विवरण के अनुसार आप संधिवात नामक रोग से पीड़ित प्रतीत हो रहे हैं।आपने कोई जांच अथवा एक्सरे आदि कराया है कि नहीं, यह स्पष्ट नहीं किया है और न ही आप द्वारा किन-किन अंग्रेजी व आयुर्वेदिक दवाओं का सेवन किया गया अथवा किया जा रहा है, इसकी भी जानकारी नहीं दी गयी है।

चूंकि आपका मोटापा बढ़ता जा रहा है हो सकता है आप थायराइड ग्रस्थ के विकार से भी पीड़ित हों अतः आप रक्त की जांच में टी-३, टी-४, टी.एस.एच. सीरम-यूरिक एसिड सीरम-कैल्शियम, सीरम-क्रिटेनीन अवश्य करा लें। आपने यह भी स्पष्ट नहीं किया है कि आपके कौन-कौन से जोड़ों में सूजन व दर्द हो रहा है। यदि घुटनों में सूजन व दर्द हो तो दोनों घुटनों का खड़ी स्थिति में एक डिजिटल एक्स-रे, ए.पी. व लेटरल व्यू में कराकर रिपोर्ट प्रेषित करें। आपका सही निदान होकर उचित चिकित्सा परामर्श दे दिया जावेगा।

आप मधुमेह रोग से भी पीड़ित हैं रक्त शर्करा खाली पेट व भोजन के दो घण्टे बाद कितनी रहती है यह भी सूचित करें।

आपके पेट खराब होने का कारण आपके द्वारा ली जा रही दर्द निवारक अंग्रेजी दवायें भी हो सकती हैं अतः इन दवाओं का कम से कम प्रयोग करें सम्भव हो तो हल्का गुनगुना दूध का सेवन अवश्य करें।

आपकी सभी समस्यायें एक दूसरे से सम्बन्धित हो सकती हैं इस लिये मेरे द्वारा बताई गयी जांचों को यथाशीघ्र कराकर सूचित कर परामर्श प्राप्त कर लें।

सम्प्रति आप काम्चनार गुग्गुल व महा योगराज गुग्गुल को २-२ की मात्रा में सुबह शाम लेवें। मधुमेह हेतु वसन्त कुसुमाकर रस (वटी) एक व चन्द्रप्रभा वटी २ की मात्रा में सुबह-शाम भोजन से पूर्व लेने से लाभ होगा।

महारास्नादि क्वाथ व ग्रीन पुननर्वा को १५-१५ मि.लि. की मात्रा में सुबह शाम भोजन के बाद लेवें। दर्द के स्थान पर पाइरोफ्लैक्स या मायोस्टाल जोड़ों को ठण्ड से बचावें व सभी जोड़ों को निरन्तर गतिशील बनाये रखें।

आपकी जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर आपको पंचकर्म सम्बन्धी कुछ जानकारी भी प्रदान कर दी जावेगी। उसे आप किसी कुशल आयुर्वेद चिकित्सक की देख रेख में, व्यवहार में लेकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य
पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता चिकित्सालय
लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ

चित्त को निर्मल बना ले

योगसाधक! साधना में सफलता निश्चित मिलेगी,
वासनाओं से बचाकर चित्त को निर्मल बना ले।
प्रभु मिलन की चाह होना ईश का वरदान मानो।
शूल से चुभते हुए अपमान फूल समान जानो।।
प्रिय जनों की बेरूखी वैराग्य का कारण बनेगी।
सदा सबके गीत प्रियतम-प्रीति को सम्बल बना ले।
वासनाओं से बचाकर.........।।१।।
बहुत संग्रह किया, अब तो त्याग दे वित्तैष्णा को।
क्या मिला पद-मान पाकर, भूल जा लोकैष्णा को।।
व्यर्थ ही जीवन गंवाया आज तक, परिवार के हित,
एषणाओं में उलझ मत चित्त को चंचल बना ले।
वासनाओं से बचाकर........।।२।।
कौन है तेरा हितैषी एक प्रभु बिन इस धरा पर?
कौन है जो बांट लेगा कर्मफल तुझसे बराबर?
ये सभी संगी सयाने त्याग देंगे एक क्षण में,
नित्य -संगी 'ओ३म्' को ही मीत निज प्रतिपल बना ले।
वासनाओं से बचाकर...............।।३।।
याद कर किसने दिया यह रूप मानव का सलोना।
गोद मां की कौन भरता डालकर चंचल खिलौना।।
जब आरक्षित हो झुलसता तन तपस की दोपहर में,
सर्वव्यापक परम मां को प्यार का आंचल बना ले।
वासनाओं से बचाकर...........।।४।।
प्रणव धातु से आत्मशर को छोड़ उसका लक्ष्य पाने।
ब्रह्म से निश्चित मिलेगा - बात ऋषि की क्यों न माने।
संस्कारों को मिटा अन्तःकरण को स्वच्छ करले,
साधना से साध मन 'साधक' उसे अविलम्ब बना ले।
वासनाओं से बचाकर.....।।५।।

प्रताप कुमार 'साधक'
मो.-६४५०००१४४१

स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म व संस्कृति के सर्वाधिक प्रेमी ऐतिहासिक देशवासी

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

धर्म व संस्कृति के इतिहास पर दृष्टि डालने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि महाभारत काल में ह्रासोन्मुख वैदिक धर्म व संस्कृति दिन प्रतिदिन पतनोन्मुख होती गई। महाभारत युद्ध का समय लगभग पांच हजार वर्ष एक सौ वर्ष है। महाभारत काल तक भारत ही नहीं अपितु समूचे विश्व में वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार रहा हैं यह भी तथ्य है कि विश्व में आज से पांच हजार वर्ष पूर्व कोई अन्य मत, धर्म व संस्कृति थी ही नहीं। वेद-आर्य धर्म के पतन का कारण ऋषि-मुनि कोटि के विद्वानों व आचार्यो का अभाव व कमी ही मुख्यतः प्रतीत होती है। महाभारत युद्ध में देश के बड़ी संख्या में अनेक राजा, क्षत्रिय व विद्वान मृत्यु को प्राप्त हुए। इससे राजव्यवस्था में खामियां उत्पन्न हुई। वर्ण-संकर का कारण भी यह महाभारत युद्ध था। वैदिक वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त हो गई और उसका स्थान जन्मना जाति व्यवस्था, जिसे महर्षि दयानन्द ने मरण व्यवस्था कहा है, ने ले लिया। ऋषि-मुनियों व वेदों के विद्ववानों की कमी व प्रजा द्वारा धर्म-कर्म में रूचि न लेने के कारण अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न होने आरम्भ हो गये थे जो उन्नीसवीं शताब्दी, आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व, अपनी चरम अवस्था में पहुंच चुके थे। लोगों को यह पता ही नहीं था कि यथार्थ धर्म जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा चार आदि ऋषियों को दिये गए चार वेदों ऋग्वेद, यजर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के ज्ञान से आरम्भ हुआ था, वह प्रचलित अज्ञान व अन्धविश्वासयुक्त मत वा धर्म से कहीं अधिक उत्कृष्ट व श्रेष्ठ था व है। सौभाग्य से देश के सौभाग्य का दिन तब आरम्भ हुआ जब महर्षि दयानन्द के विद्या गुरू स्वामी विरजानन्द जी का जन्म पंजाब के करतारपुर की धरती पर हुआ। बचपन में उनके माता-पिता का देहान्त हो गया था। शीतला अर्थात् चेचक का रोग होने के कारण आपकी दोनों आंखे बचपन में ही चली गई। आपके भाई व भाभी का स्वभाव व व्यवहार आपके प्रति उपेक्षा व प्रताड़ना का था। अतः आपने गृह त्याग कर दिया। आपको घर से न जाने देने व रोकने वाला तो कोई था ही नहीं। अतः आप घर छोड़ने के बाद ऋषिकेश, हरिद्वार व कनखल आदि स्थानों पर रहकर तपस्या व साधना करते रहे। संस्कृत का अध्ययन भी आपने किया। विद्या ग्रहण के प्रति उच्च भाव संस्काररूप में आपमें विद्यामान थे जिसका लाभ यह हुआ कि आप नेत्रहीन होने पर भी संस्कृत व वैदिक ज्ञान से सम्पन्न हुए जो कि विगत पांच हजार वर्षो में हुए अन्य विद्यावानों के भाग्य में नहीं था।

इतिहास में स्वामी दयानन्द जी का व्यक्तित्व भी अपूर्व व महान है। वह भी १४ वर्ष की अवस्था में सन् १८३६ की शिवरात्रि के दिन व्रत व पूजा में अज्ञान व अन्धविश्वास की बातों का प्रमाण अपने शिवभक्त पिता से मांगते हैं। उनका समाधान न पिता और न ही अन्य कोई कर पाता है। उनमें सच्चे शिव व ईश्वर को जानने का संस्कार वपन हो जाता है। शिवरात्रि की घटना के बाद मूलशंकर, स्वामी दयानन्द का जन्म का नाम, की बहिन और चाचा की मृत्यु हो जाती है। अब उन्हें मृत्यु से डर लगता है। वह मृत्यु का उपाय जानने की कोशिश करते हैं, परन्तु उनका निश्चित समाधान घर पर रहकर नहीं होता। अतः वह अपने प्रश्नों के समाधान के लिए बड़े योगियों व विद्वानों की शरण में जाने के लिए अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर का त्याग कर निकल पड़ते हैं। स्वामी विरजानन्द जी के पास सन् १८६० में पहुंच कर व उनसे लगभग ३ वर्ष अध्ययन कर उनकी सभी इच्छायें पूरी होती है। समाधि सिद्ध योगी तो वह गुरू विरजानन्द जी के पास आने से पहले ही बन चुके थे। अब वह विद्या में निष्णात भी हो गये। स्वामी विरजानन्द जी से विदा लेने से पूर्व स्वामी दयानन्द अपने गुरू के लिए उनकी प्रिय वस्तु लौंग दक्षिणा के रूप में लेकर उपस्थित होते हैं। गुरूजी इस दक्षिणा को स्वीकार करते हुए दयानन्द जी से अपने मन की बात कहते हैं। उन्होंने कहा कि सारा देश ही नहीं अपितु विश्व अज्ञान व अन्धविश्वासों की बेडियों में जकड़ा हुआ है जिससे सभी मनुष्य नानाविध दुःख पा रहे हैं। उन्हें दूर करने का एक ही उपाय है कि वेदों के ज्ञान का प्रचार कर समस्त अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियों को दूर किया जाये। गुरूजी स्वामीजी से वेदों का प्रचार कर मिथ्या अन्धविश्वासों का खण्डन करने का आग्रह करते हैं। उत्तर में स्वामी दयानन्द अपने गुरू की आज्ञा शिरोधार्य कर उसके अनुसार अपना जीवन अर्पित करने का वचन देते हैं। गुरूजी दयानन्दजी के उत्तर से सन्तुष्ट हो जाते हैं। स्वामी दयानन्द का इस घटना के बाद का सारा जीवन अज्ञान पर आधारित अन्धविश्वासों के खण्डन, समाज सुधार व सत्य ज्ञान के भण्डार वेदों के प्रचार में ही व्यतीत होता है।

स्वामी दयानन्द जी ने गुरूजी से विदा लेकर मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, सामाजिक विषमता व सभी सामाजिक कुरीतियों का खण्डन करने के साथ वेदों की शिक्षाओं का प्रचार किया। वह एक-एक करके अनेक स्थानों पर जाते, वहां प्रवचन देते, लोगों से मिलकर उनकी शंकाओं का समाधान करते, पौराणिक व इतर मतों के विद्वानों से शास्त्रार्थ करते और वेदों के प्रमाणों व युक्तियों से अपनी बात मनवाते थे। १६ नवम्बर, १८६६ को काशी में मूर्तिपूजा पर वहां के शीर्षस्थ लगभग ३० पण्डितों से उनका विश्व प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ जिसमें वह विजयी होते हैं। इसके बाद उन्होंने आर्यसमाजों की स्थापना, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेद भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, गोकरूणा-निधि, व्यवहारभानु आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया तथा परोपकारिणी सभा की स्थापना की। इन सबका उद्देश्य देश व विश्व से धार्मिक अज्ञान, अन्धविश्वास सहित सामाजिक विषमता तथा सभी सामाजिक कुरीतियों को दूर कर वैदिक धर्म की विश्व में स्थापना करना था जिससे संसार से दुःख समाप्त होकर सर्वत्र सुख व आनन्द का वातावरण बने।

स्वामी विरजानन्द जी और स्वामी दयानन्द के जीवन का सबसे बड़ा गुण उनका ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान, उसके प्रति पूर्ण समर्पण, वेदों का यथार्थ ज्ञान तथा उसके प्रचार व प्रसार की प्रचण्ड व प्रज्जवलित अग्नि के समान तीव्रतम प्रबल व दृण भावना का होना था। अज्ञान व अन्धविश्वास सहित सामाजिक विषमता व सभी सामाजिक कुरीतियां उन्हें असहय थी। उन्होंने प्राणपण से वेदों का प्रचार कर अज्ञान के तिमिर का नाश किया। उन दोनों महापुरुषों के समान वेदों का ज्ञान रखने वाला व उनके प्रचार व प्रसार के लिए अपनी प्राणों को हथेली पर रखने वाला उनके समान ईश्वरभक्त, वेदभक्त, ईश्वर-वेद-धर्म का प्रचारक, अद्वितीय ब्रह्मचारी, माता-पिता-परिवार-गृह-संबंधियों का त्यागी व हर पल समाज, देश व मानवता के कल्याण का चिन्तन व तदनुरूप कार्यों को करने वाला महापुरुष दूसरा नहीं हुआ। उन्होंने अपने जीवन में जो कार्य किया, वह आदर्श कार्य था जो ईश्वर द्वारा प्रेरित होने सहित उसे करने की समस्त शक्ति व बल भी उन्हें ईश्वर की ही देन था। यदि यह दोनों महापुरुष यह कार्य न करते तो हमें लगता है कि कुछ समय बाद वैदिक धर्म व संस्कृति संसार से विदा हो कर इतिहास की वस्तु बन जाती। स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द जी ने परस्पर मिलकर जो कार्य किया उसे अभूतपूर्व कह सकते हैं। महर्षि दयानन्द जैसा ईश्वर-वेद-देश-समाज भक्त दूसरा मनुष्य नहीं हुआ है। उन्होंने संसार के लोगों को सच्चा मार्ग दिखाया। उसी मार्ग का अनुसरण कर ही मनुष्य अपनी आत्मा की उन्नति कर सकता है, अपने भविष्य व मृत्योत्तर जीवनों व जन्मों को संवार सकता है और धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। यही मनुष्य जीवन का चरम व प्रमुख उद्देश्य व लक्ष्य है। अपने गुणों व कार्यो से न केवल गुरू विरजानन्द अपितु महर्षि दयानन्द भी सूर्य व चन्द्र की समाप्ति तक अमर रहेंगे। इन दोनों महान आत्माओं का विश्व के इतिहास में अद्वितीय व अमर स्थान बन गया है। उनके प्रयासों के परिणाम से हम निःसंकोच वैदिक धर्म को भविष्य का विश्व धर्म भी कह सकते हैं जिसमें सभी मनुष्यों का सुख व कल्याण निश्चित रूप से निहित है। अन्य कोई मार्ग व पथ मनुष्य जीवन व देश की उन्नति व दुःखों से मुक्ति का नहीं है।

आर्य समाज में इतिहास प्रदूषण की महामारी

राजेन्द्र जिज्ञासु
वेद सदन, अबोहर

इस लेखक की पुस्तक इतिहास प्रदूषण पढ़कर श्रीमान देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने फोन पर इस विनीत से बातचीत की और आर्यमित्र के लिए इस विषय पर एक लेखमाला देने का अनुरोध किया। मैं सेवानिवृत्त होने पर केवल लेखन व शोध कार्य में पहले से भी कहीं अधिक व्यस्त रहता हूँ तथापि श्री वर्मा जी का कहा न टाला जा सका। 'इतिहास प्रदूषण' विषय पर आगे कुछ लिखने का विचार तो नहीं था परंतु उस पुस्तक से कुछ सीखने व प्रेरणा लेने की बजाय एक दो महानुभावों ने तिलमिलाकर विषयान्तर होकर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए इस इतिहास प्रदूषण अभियान को और बल प्रदान करने का कार्य छोड़ दिया है। इस लेखक के पास इस विषय में सामग्री तो और भी पर्याप्त है परंतु मेरा प्रयोजन तो आर्य समाज को सजग करना है । किसी का दिल दुखाना व छोड़ना अपना उद्देश्य नहीं था और न है।

अब जो रोग को रोग नहीं मानते उनकी सेवा के लिए इतिहास प्रदूषण का दूसरा भाग भी आयेगा। यह लेखक सर्वज्ञ तो है नहीं, भूलचूक तो किसी से भी होना संभव है। एक आर्य का कर्तव्य है कि जाने अनजाने में हुई भूल का पता देने पर सुधार किया जाये। सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने की दुहाई देने वाले समाज में कुछ महानुभाव भूल को प्रदूषण को रोकने की बात करने पर इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना बैठे हैं। लीजिए उ.प्र. से ही आरम्भ करते हैं

१. महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की आत्म कथा एक से अधिक बार छप चुकी है, उसे पढिये। हैदराबाद सत्याग्रह के समय महात्मा जी गुलबर्गा में सत्याग्रह करके जेल गये थे। यही बात जीवन चक्र ग्रंथ में पूज्य उपाध्याय जी ने लिखी है। ऐसा ही लौह पुरुष स्वामी स्वतंत्रतानन्द ग्रंथ में लिखा मिलता है। बीसियों और पुराने लेखकों व तत्कालीन पत्रों में भी यही छपा मिलता है। श्री भवानी लाल भारतीय की पकड़ में इतिहास शास्त्र आ नहीं रहा। वह जो जी में आता है लिख देते हैं। इतिहास शास्त्र उनकी ''वैज्ञानिक शोध शैली'' का भार नहीं सह सकता। आपने अपनी एक कृति आर्य समाज के बीस बलिदानियों में लिखा है कि पूज्य महात्मा जी अपने जत्थे सहित हैदराबाद में बंदी बनाये गये। कहिये ये इतिहास प्रदूषण नहीं तो क्या हैं। जिस विषय का ज्ञान न हो उस पर लेखनी चलाना क्या पाप नहीं है?

२. पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कभी गुरुकुल कांगड़ी में नही रहे। भारतीय जी ने आपकी नियुक्ति गुरुकुल कांगड़ी में करके एक रंगीन कहानी गढ़कर उनको उपाध्याय बना दिया। सत्यार्थ प्रकाश का प्रमाण उसके साथ जोड़ दिया। उपाध्याय जी जब बिजनौर में सेवारत थे तब अपने नाम के साथ वर्मा लिखा करते थे आगे चलकर वर्मा लिखना भी छोड़ दिया। एक बार लखनऊ समाज के उत्सव पर आप पधारे। तब बहुत दूर से एक आर्य भाई आपका नाम पढ़कर आपको चीफ जज पं. गंगाप्रसाद समझकर दर्शनार्थ आया। तब से पं. गंगाप्रसाद जी चीफ जज से भेद करने के लिए अपने नाम के साथ उपाध्याय लिखना आरम्भ कर दिया। यह घटना उपाध्याय जी ने रिफार्मर साप्ताहिक में एक लेख में दी थी। श्रीमान भारतीय जी की सूझ पर बलिहारी जी उपाध्याय जी का कथन झुठलाकर एक नई कहानी गढ़ दी। इतिहास रौंदा गया तो क्या?

३. श्री जोंस नाम के एक विदेशी ने आर्य धर्म नाम से एक पुस्तक लिखी। भारतीय जी ने भी उसका गुणगान किया। लेखक ने कहीं कहीं भ्रामक बातें लिखी है। आर्य समाज में शोध की चिंता में घुलने वाले भवानी लाल ने गोरे लेखक की एक भी भ्रामक बात का प्रतिवाद नहीं किया। क) यथा पं. लेखराम ऋषि के देहत्याग के समय अजमेर गये। ख) पं. लेखराम सन! १८०७ से १८६० तक आर्य गजट के सम्पादक रहे। ग) भाई जवाहर सिंह परोपकारिणी सभा के उप प्रधान रहे। परकीय मतों व लेखकों के लेखों की निराधार बातों का इन्हें साहस ही नहीं हुआ।

४. ऋषि दयानन्द ने एक बार मुंशी इन्द्रमणि को बुजुर्ग बतलाया था वह ऋषि से आयु में बहुत बड़े थे। भारतीय जी मुंशी इन्द्रमणि का जन्म सन् १८६५ में लिखते हैं। क्या एक बच्चे को आर्य समाज मुरादाबाद का प्रधान बनवा दिया। क्या बालक इन्द्रमणि ऋषि से गंभीर दार्शनिक चर्चा करने सन् १८७३ में आठ वर्ष की आयु में अलीगढ़ पहुंच गये। अपनी इस भूल का सुधार करने का इनमें साहस कहां, न जाने किस प्रयोजन से आर्य समाज का इतिहास प्रदूषित करने की सतत साधना किए जा रहे हैं?बालक इन्द्रमणि से भारतीय जी ने कई ग्रंथ लिखवा व छपवा दिये। मुंशी जी के जन्म से सात वर्ष पूर्व भी भारतीय जी ने मुंशी जी से एक ग्रंथ लिखवा व छपवा दिया। जो जांच परख करना चाहें वे इनकी पोथी महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक व सत्संगी देख लें। एक ही लेख में बहुत मनगढन्त हदीसें व इतिहास प्रदूषण मिलेगा। पं. लेखराम जी ने सन् १८६३ में एक लेख में मुंशी जी के निधन की चर्चा की है। मिर्जा गुलाम अहमद की मृत्यु सन् १६०८ में हुई उसने भी मुंशी इन्द्रमणि जी की मृत्यु का उल्लेख किया है। भारतीय जी का हठ है कि नहीं। मुंशी जी का निधन सन् १६२१ में हुआ। दुर्भाग्य से आर्य समाज उनके प्रदूषण अभियान को जानते हुए भी चुप्पी साधे बैठा है।

आर्य समाज में ऋषि जीवन को प्रायः सब लेखकों ने माना है कि मुंशी मुक्ता प्रसाद और मुंशी प्यारे लाल जी चांदापुर वाले कबीरपंथी परिवार में जन्मे। मुंशी मुक्ताप्रसाद जी का झुकाव वैदिक धर्म की ओर हो गया। फिर प्यारे लाल भी आर्य समाज से जुडते चले गये। इसके प्रमाण हमने सुरक्षित कर दिये हैं। भारतीय जी लिखते हैं कि इनका झुकाव कबीर पंथ की ओर था। उनके तो पिता ही कबीर पंथी थे। क्या यह इतिहास प्रदूषण नहीं हैं?

अब चांदापुर शास्त्रार्थ विषयक एक नया प्रदूषण फैलाया जाने लगा है। हमने अपने ग्रंथ में लिखा है कि चांदापुर शास्त्रार्थ से पूर्व मुसलमानों ने ऋषि जी से मिलकर कहा मुसलमान और हिन्दु मिलकर ईसाइयों से शास्त्रार्थ करें। ऋषि ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। यह हार जीत का प्रश्न नहीं । सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थ किया जायेगा।

श्री मान भारतीय जी के लिए दुखी होने वाले हमारे एक प्रिय बंधु भावेश मेरजा का आग्रह है कि सब जीवनी लेखकों ने लिखा है कि कुछ लोग ऋषि से मिले। किसी ने नहीं लिखा कि मुसलमान या मौलवी लोगों ने ऐसा कहा। जिन्हें इतिहास शास्त्र का गंभीर ज्ञान न हो और जिन्होंने मूलस्रोत न देखें हो तत्कालीन पत्रों तक जिन प्रेमियों की पहुंच न हो उनको क्या घर घर जारक एक एक बात का प्रमाण दिया जाये।

हमें साहित्य पिता पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय और पूज्य गुरूवर स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी से सीख ही यह दी गई कि कभी अप्रमाणिक बात न करें। जिन लेखकों ने लिखा है कि कुछ लोगों ने ऋषि नसे कहा उन्होंने इस से पहले यह लिखा है कि पादरी व मौलवी पहुंच गये। पादरी तो ऐसी बात क्यों कहेंगे?निश्चित तथ्य यही हुआ कि मौलवियों ने ही ऋषि जी को यह प्रस्ताव दिया।

मैंने अपने ग्रंथ में राधा स्वामी मत के तृतीय गुरू हजूर जी महाराज लिखित ऋषि जीवन के कई प्रमाण दिये हैं। हजूर जी महाराज उ. प्र. के ही थे। ऋषि के समकालीन थे और मूलतः कबीर पंथी ही थे। आप ने स्पष्ट लिखा है कि सन! १८७६ के चांदापुर के मेले में यह बात फैल गयी कि मुसलमान जीत गये। कबीर पंथी हार गये। कबीर पंथियों को मुसलमान बनाने का खतरा बढ़ गया। इसी कारण ऋषि दयानन्द व मुंशी इन्द्रमणि जी को बुलवाया गया। हजुर जी ने जोरदार शब्दों में लिखा है कि पिटते हिन्दुओं ने प्रथम बार अपने एक मुनि महात्मा सन्यासी दयानन्द के सामने टक्कर में परकीय मतों के मौलवियों व पादरियों को भागते देखा। उस युग के एक देश प्रसिद्ध साहित्यकार के प्रमाण देने पर मेरे लेख का लाभ उठाने कुछ ऊर्जा प्राप्त करने की बजाय भारतीय जी के मिथ्या कथनों के पक्ष को दृढ़ करने के लिए यह भाई मेरे लेखों में दोष खोजने के लिए पसीना बहा रहे हैं। मेरी जहां भूल होगी जाने या अनजाने में हो अथवा मुद्रण दोष से मैं भूल सुझाये जाने पर खेद प्रकट करूँगा व सुधार अवश्य करूँगा।

हम क्या करें इन दोष खोजने वालों की जानकारी का क्षेत्रफल भारतीय जी तक हैं अथवा रोमां रोलां व मैक्समूलर जी तक है। हमारी इनसे कर जोड विनती है कि अपने घर की ज्ञानराशि का लाभ उठाओ। मूलस्रोत्रों तक पहुंचो। जिज्ञासु को कोसने से भारतीय जी का मिथ्या कथन सत्य सिद्ध न कर सकोगे। मित्रों पं. लेखराम जी ने अपने एक ग्रंथ में स्पष्ट लिखा है कि मौलवियों ने ऋषि जी से विनती की थी कि हिंदू व मुसलमान मिलकर पादरियों से शास्त्रार्थ करें। आप आइये! मैं आपको पंडित लेखराम जी का वह ग्रंथ दिखा दूंगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जन्म भवानी लाल भारतीय जी ने सन् १८५४ में करवाया है। परमात्मा तो सन् १८५४ में उन्हें जन्म न दे सका। इन्होंने श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी को आनन्द स्वामी जी से सन्यास दिलवा दिया है। मैं तो उनकी सन्यास दीक्षा का एक प्रत्यक्ष दर्शी साक्षी हूँ। महात्मा आनन्द स्वामी जी तो उस दिन प्रयाग के आस पास तो क्या कोसो दूर थे। इस इतिहास प्रदूषण पर इनके बिचौलियों को लज्जा आनी चाहिए थी। इससे आर्य समाज को अपयष मिल रहा है और मिलेगा।

ऋषि जी के बलिदान पर आर्य समाचार मेरठ में ऋषिवर के अंतिम दिनों की एक दिन की घटना छपी थी। पं. लेखराम जी ने अपने ग्रंथ में अंतिम समय की घटनाओं

शेष पेज ७ पर देखें....

पृष्ठ ३ का शेष.....
१०/- में मिलती थी प्रत्येक परिवार में यह पुस्तक होनी चाहिए तथा प्रत्येक आर्य को अनिवार्य रूप से पढ़नी चाहिए। ऐसा मेरा विचार है। सभ्य समाज के निर्माण के लिए उपयोगी पुस्तक है। देश और समाज को आप उच्च स्तर पर देखना चाहते थे उसी के लिए आपने प्रयास किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्यों में जो विशेषतायें होनी चाहिए वे सभी आप में थी आप ग्रामीण विकास के लिए समर्पित रहे। नारी शिक्षा और सुरक्षा दोनों ही आपके मुख्य मुद्दे थे। आपने देहात में किसानों को बिजली सड़क की सुविधायें दी। आपका नारा था कि देश की खुशहाली का रास्ता ग्रामों से होकर जाता है ग्राम खुशहाल होंगे तो शहरों में भी खुशहाली आयेगी। आज स्मार्ट इण्डिया बनाने के चक्कर में सभी चक्कर काट रहे हैं और चक्कर खाकर कोई मार्ग नहीं सूझता सभी परेशान हैं।

अतः चौधरी साहब के व्यक्तिगत जीवन से सामाजिक और राजनीतिक जीवन से प्रत्येक आर्य को प्रेरणा लेनी चाहिए और प्रत्येक नेता को अनुकरण करना चाहिए तभी देश और समाज की प्रगति संभव है। राजनैतिक उपलब्धियां एवं कुछ घटनायें आपने पढ़ी होंगी मैंने तो अपने साथ बीते संस्मरणों के आधार पर उनके श्रेष्ठ व्यक्तित्व को आपके समक्ष प्रस्तुत किया है जो आचार्य चाणक्य की याद दिलाता है जो सरदार वल्लभ भाई पटेल की याद दिलाता है जो रात्रि में वेष बदलकर राजा भोज की तरह जनता के दुख दर्द को समझता है जो वेद के संदेश चरैवेति चरैवेति को सार्थक करता है उसे समाज कैसे भूल सकता है?एक सामान्य निर्धन किसान परिवार में जन्म लेकर उच्च शिक्षा एम.ए. एल.एल.बी. की पढ़ाई पढ़कर उस समय कोई बड़ा अधिकारी बन सकते थे पैसे कमा सकते थे लेकिन उस आचार्य चाणक्य की कुटिया में सदैव यज्ञ पात्र एवं समिधायें ही रही भोग विलास से सदैव दूर रहे। जिनके नाम को सुनकर सरकारी अधिकारी स्वतः अनुशासन में आ जाते थे। यह उनके चरित्र का जादू था जो दुश्मन के भी सिर चढ़कर बोलता था। ऐसे भारत के प्रधानमंत्री पद पर शोभायमान रहे चौ. चरण सिंह जी आर्य की जयन्ती पर अपने गुरूकुल परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

पृष्ठ ६ का शेष.....
का पूरा वृतांत उसी के आधार पर लिखा है। देवेन्द्र बाबू जी श्री हरविलास जी ने यह सामग्री पं. लेखराम जी के ग्रंथ से ली। किसी ने पं. लेखराम जी का या आर्य समाचार का उल्लेख नहीं किया। यह महत्वपूर्ण विशेषांक आर्य समाज ने कहीं सुरक्षित नहीं किया। ईश्वर की विशेष कृपा हुई जो किसी प्रेमी ने मुझे यह अंक भेंट कर दिया। इस धरती पर केवल इसी सेवक के पास इस समय इस अंक की एक दुर्लभ प्रति है।

इसके पृष्ठ २१३ पर छपा है कि जोधपुर की सीमा से बाहर आबू पर्वत पर कर्नल प्रताप सिंह ने २७ अक्टूबर को ऋषि के हालचाल का पता किया और जोधपुर लौट गया। २७ अक्टूबर को ऋषि जी ने अजमेर के लिए प्रस्थान कर दिया। तब वे मूर्छित होते थे। आर्य समाचार में ऋषि से प्रताप सिंह की बातचीत का कतई उल्लेख नहीं। भारतीय जी के ग्रंथ में यहां एक हदीस जोड़ दी गई हैं। इन्हें तो जोधपुर के राजवंश प्रताप सिंह व नन्ही वेश्या की चिन्ता सताती है। मित्रों, विष दिये जाने के पश्चात जोधपुर का जसवंत सिंह, प्रताप सिंह और राजा तेजसिंह कोई भी ऋषि का पता करने जोधपुर उनके पास नहीं आया। हा इतनी क्रूरता! इस क्रूरता के लिए दोषी एक महानायक प्रताप सिंह पर भारतीय जी ने ४० पृष्ठ लिखे हैं। गुलबर्गा हत्याकांड, लोहारू हत्याकांड, वीर नाथूराम, पं. लेखराम जी, श्याम भाई पर बीस तीस पृष्ठ लिखने का कभी विचार न आया। इतिहास में यह हठावट मिलावट व प्रदूषण करने की इनकी कहानी लम्बी है।

क्रमशः......

विश्व शान्ति महा यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट का वार्षिक महोत्सव एवं विश्व शान्ति महायज्ञ दिनांक ४, ५, ६ दिसम्बर, २०१५ को बड़े ही हर्षोल्लासके साथ सम्पन्न किया गया, इस महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्र देव शास्त्री जी एवं वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश जी महाराज पटियाला थे। सुन्दर भजनों की प्रस्तुति के लिए सुश्री अल्का आर्या ग्रेटर नोएडा से पधारी, आचार्य जी ने ईश्वर, यज्ञ, देश भक्ति, न्याय व्यवस्था, कुरीतियां इत्यादि विषयों पर तीनों दिन बहुत शोध युक्त व्याख्यान दिया। स्वामी ब्रह्मवेश जी ने भी अपने प्रवचनों से सबको आनन्दित किया। बहन अल्का आर्या जी ने अपने भजनोंव उपदेशों के द्वारा जनता कोमन्त्र मुग्ध करती रही। वार्षिक महोत्सव व विश्व शान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम बड़ा ही उत्साह वर्धक रहा।

मुम्बई में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में आर्यवीर दल मुम्बई ने ''आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर'' का आयोजन रविवार दि.१५ से रविवार दिनांक २२ नवम्बर, २०१५ तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में उत्साहपूर्वक किया गया।

यज्ञके उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण शिविराध्यक्षा श्रीमती यशबाला गुप्ता एवं महिला आर्यसमाज सान्ताक्रुज की संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के करकमलों से हुआ।

इस शिविर की मुख्यशिक्षिका सुश्री सुव्रती आर्या देहरादून गुरूकुल एवं ज्योति आर्या बागपत मेरठ थी। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेतेहुए कन्याओं का उत्साहवर्धन किया।

गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध

गौहत्या पर प्रतिबन्ध हो, दयानन्द - गाँधी का नारा है।
इस पर अमल करना, राष्ट्रीय कर्त्तव्य हमारा है।। १
भारतीय संस्कृति की प्रतीक, गाय हमारी माता है।
आदिकाल से इसके साथ अटूट हमारा नाता है।। २
जीवों का हनन करना, मनुष्य मात्र का कर्म नही है।
मांस भक्ष्य हो जिस मत में, वह तो कोई धर्म नही है।। ३
जीवों की हत्या करना तो नराधम असुरों का कर्म है।
मनुष्य के लिए तो स्वीकार्य अहिंसा परमो धर्म है।। ४
गाय तो हम सभी के लिए माता-सम हितकारी है।
मनुज मात्र के लिए यह विविध भाँति उपकारी है।। ५
वृद्ध गायों की हत्या को कुछ लोग उचित ठहराते हैं।
उसके पालन में लगे धन को वे व्यर्थ बतलाते हैं।।६
यदि वह धन नई गायों के संवर्धन पर लगेगा।
कहते हैं, देश के लिए लाभदायक रहेगा।। ७
ऐसे जन निज वृद्धा माता का खर्च व्यर्थ क्यों उठाते हैं ?
उस पर लगे धन को युवा पर क्यों नहीं लगाते हैं।। ८
वृद्धा गायों के पालन से तो, प्राप्त गोमय उत्पाद होगा।
उससे प्रकाश, इंधन भी एवं प्राकृतिक खाद होगा।। ९
वृद्धा गायों के पालन-पोषण पर जो भी खर्च आएगा।
इन उत्पादों के विक्रय से वह खर्च पूरा हो जाएगा।। १०
कुछेक की दृष्टि में गोमांस, गरीबों का सस्ता आहार है।
पर क्या इससे भी सस्ता, नहीं अहिंसित शाकाहार है।। ११
कुछ हठधर्मी गोमांस में, प्रोटीन अधिक बताते हैं।
वे उत्तर दें, हाथी, घोड़ा आदि कहां से प्रोटीन पाते हैं।। १२
दुनिया की सारी शक्ति की माप की ईकाई अश्व-शक्ति है।
मांसाहारियों, क्यों हिंसा से प्राप्त मांस में तेरी आशक्ति है।। १३
गो-करूणानिधि पढ़ो, गो-पालन लाभकारी व्यापार है।
गो-संवर्द्धन राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का दृढ़ आधार है।। १४
राष्ट्रीय हित में गो-हत्या पर तत्काल प्रतिबंध हो।
वृद्धा गायों की रक्षा का सम्यक सरकारी प्रबन्ध हो।। १५

-सूर्य देव चौधरी

गुरू विरजा नन्द स्मारक भवन बनेगा

अत्यन्त हर्ष है कि पंजाब सरकार द्वारा गुरू विरजानन्द यादगारी भवन बनाने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया गया है। यह कार्य ८ अथवा ९ महीने में पूर्ण होने की संभावना है। इस भवन हेतु भूमि एवं भवन पर होने वाला सारा व्यय पंजाब सरकार द्वारा किया जाएगा।

हम आपसे निवेदन करते हैं इस कार्य के लिए धन्यवाद एवं सरकार की सराहना हेतु मुख्यमंत्री पंजाब सरकार को विशेष आभार एवं धन्यवाद पत्र व्यक्तिगत एवं संस्था द्वारा अवश्य लिखा जाए। इससे सरकार को हमारी संख्या एवं ताकत के साथ साथ हमारी एकजुटता का भी संदेश जाएगा।

धन्यवाद सहित!

-ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान
गुरु विरजा नन्द स्मारक समिति ट्रस्ट
करतारपुर-१४४८०१, जालन्धर (पंजाब)

आर्य समाज अन्धेरी मुम्बई का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी (पं.) मुबई का २६वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक गुरूवार २४ दिसम्बर, से रविवार २७ दिसम्बर, २०१५ तक मनाया गया। इस अवसर परविश्व शान्ति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए २१ कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय रहे।

आर्ष कन्या गुरूकुल दाधिया राजस्थान की कन्याओं द्वारा वेदपाठ एवं सुप्रसिद्ध सुमधुर गायक श्री विजय आनन्द जी फिरोजपुर के भक्ति संगीत का आनन्द सभी को प्राप्त हुआ।

-हरीश आर्य, प्रधान

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन (संगोष्ठी)

२६-२७ मार्च २०१६ को आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई में आयोजित

आर्य प्रतिनिधि मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक २६-२७ मार्च २०१६ को स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन (संगोष्ठी) का अयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

वेदार्थ को जानने में वेदांग ज्योतिष का ज्ञान महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष के गणित और फलित दो भेद माने जाते हैं। फलित ज्योतिष के नाम पर नक्षत्र-ग्रह-उपग्रह-मुहूर्त-जन्मकुंडली- मंगल-मंगली-शुभाशुभादि को लेकर अनेक प्रकार का पाखण्ड और अंधविश्वास फैला हुआ है। इसकी यथार्थता से आर्य जन अवगत हो सके इसी दृष्टि से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

अतः इस पुनीत कार्य में अधिकाधिक सहयोग करने की कृपा करें। सहयोग राशि वैदिक मिशन मुम्बई के नाम से चेक या ड्राफ्ट से भेजने का कष्ट करें। वैदिक मिशन मुम्बई को ८० जी का प्रमाणपत्र प्राप्त है।

सोमदेव शास्त्री
अध्यक्ष- वैदिक मिशन मुम्बई
मो. ९८६६६६६८१३०

ग्राहकों से अनुरोध

आर्यमित्र साप्ताहिक के सभी ग्राहकों से अनुरोध है कि जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वह नये वर्ष के लिए अपना शुल्क अविलम्ब भेजें। आपके सहयोग से ही हम आर्यमित्र का सम्पादन व प्रकाशन समय से करने में समर्थ रहेंगे।

-सम्पादक

स्वास्थ्य चर्चा-

गुणकारी अजवाइन

गुणकारी अजवाइन - अजवाइन भोजन में प्रयोग की जाती है। औषधि के रूप में इसका प्रयोग धडल्ले से होता है। अजवाइन एक चम्मच को २५० ग्राम पानी में उबालें और चौथाई भाग रहने पर काढ़े को छानकर रात को सोते समय गरम गरम पीकर चादर ओढ़कर सो जायें। दिन में दो बार नियमित पीने से पांच सात दिन में ही छाती का दर्द और पसली चलना ठीक हो जाता है।

यह काढ़ा दो चम्मच की मात्रासे दिन में दो बार लगातार कुछ दिन देने से छाती के सब प्रकार के रोगों में लाभ होता है।

शिशु को सर्दी लग गई हो तो छह से बारह महीने की आयु वाले छोटे बच्चों को आधा कप पानी में १०-१२ अजवाइन के दाने डालकर उबालें। आधा रहने पर इसे कपड़े से छान लें और यह काढ़ा दिन में दो बार या केवल रात में सोने से पहले पिलायें। इससे शिशु का पसली चलना, छाती दर्द आदि में विशेष लाभ होता है। यह काढ़ा यकृत, तिल्ली, हिचकी, उल्टी, खट्टी डकारें, पेट की गुडगुडाहट, मूत्र विकार और पथरी रोग का भी शमन करता है।

साभार मंगल मिलन

ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्

अयोध्या चलो! ओ३म् अयोध्या चलो!

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ एवं गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के तत्वावधान में

अध्यक्षता-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा प्रधान

चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ
एवं
पूर्वान्चल आर्य महा सम्मेलन

6 व 7 फरवरी, 2016 दिन शनिवार एवं रविवार

श्री निःश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या, फैजाबाद

मुख्य आकर्षण

1-वेद सम्मेलन, 2- गोरक्षा एवं मद्य निषेध सम्मेलन, 3- राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, 4-मानव उत्थान सम्मेलन, 5-भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन 6-कन्या भ्रूण हत्या व स्त्री शिक्षा सम्मेलन, 7-देश की दुर्दशा पर क्या आर्य समाज को राजनैतिक कदम उठाना चाहिये? 8-आर्य समाज की रचनात्मक पहल समय की माँग, 9-देश की शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल का महत्व।

नोट- (क) कृपया आगन्तुकगण अपने पधारने की संख्या के बारे में 10 जनवरी, 16 तक सूचित करने की कृपा करें।
(ख) वैदिक साहित्य, हवन सामग्री, यज्ञ पात्र आदि विक्रेतागण पूर्व से अपने स्टाल बुक करा लें।
(ग) प्रत्येक आर्य समाजें, आर्य शिक्षण संस्थायें, गुरुकुल आदि के पदाधिकारी गण अपना सचित्र फ्लैक्स बैनर लगाकर सम्मेलन के कार्यक्रम को भव्य बनायें।

हजारों की संख्या में आर्य नर-नारी सम्मेलन में पहुंचकर आर्य समाज के विराट संगठन शक्ति का परिचय है।

अपील- इस भव्य पूर्वान्चल आर्य महा सम्मेलन में आपका तन मन धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशि की राशि की रसीद प्राप्त करने वालों से रसीद कटा लें। अथवा "आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ" कार्यालय में भी मनीआर्डर भेजकर सहयोग कर सकते हैं।

आचार्य नागेन्द्र कुमार शास्त्री	**वाई.बी. मिश्रा (राजन)**	**विमल किशोर आर्य**	**अशोक कुमार (पहलवान जी)**
मुख्य संयोजक	एडवोकेट मुख्य संयोजक	संयोजक	संयोजक
9415718089	9919019466	7499698294	9415039931

ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्⇔ओ३म्

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।